International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol.9 No.6 July – Aug 2022

यशपाल के उपन्यासों में मार्क्सवादी चिंतन

डॉ.पठान जे.सी
हिन्दी विभागाध्यक्ष, शंकरराव चव्हाण महाविद्यालय,अर्धापूर
***Corresponding Author-* डॉ.पठान जे.सी**
DOI- 10.5281/zenodo.6988537

सारांश

मार्क्सवाद एक क्रांतिकारी दर्शन के रूप में विश्व में अपना विशिष्ट स्थान रखता हैं। मार्क्सवाद क्रांतिकारी समाजवाद का ही एक रूप है। यह आर्थिक और सामाजिक समानता का दर्शन है। मार्क्सवाद मानव समाज के ऐतिहासिक, राजनीतिक, आर्थिक पक्ष को लेकर उसके वैचारिक विचार, दर्शन, कानून, कला, साहित्य-संस्कृति तथा व्यवस्था रूपों को वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में उद्घाटित करता है। कोई भी दर्शन अथवा विज्ञान अस्तित्व में तभी आता है जब सामाजिक परिस्थितियाँ उसके अनुकूल हो। उन्नीसवी शताब्दी में कार्ल मार्क्स ने दर्शन और सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में अद्वितीय अनुसंधान कार्य कर एक क्रांति का सूत्रपात किया है। मार्क्स ने व्यक्ति की मूलभूत आवश्यकताओं रोटी, कपडा और मकान पर विचार करना आवश्यक समझा। कार्ल मार्क्स के विचारों का प्रभाव बढ़ता ही गया। साहित्य के क्षेत्र में अनेक साहित्यकारों पर मार्क्सवादी दर्शन का प्रभाव दिखाई देता है। हिन्दी जगत का क्रांतिकारी व्यक्तित्व तथा श्रेष्ट उपन्यासकार यशपाल जी ने अपने उपन्यासों के माध्यम से मार्क्सवाद का प्रसार किया है। उनके उपन्यासों में हमें मार्क्सवादी चिंतन के दर्शन होते है। प्रेमचंद के बाद व्यक्तिवादी और मनोविश्लेषणवादी उपन्यासकार उपन्यास साहित्य पर हावी हो गये लेकिन यशपाल जी ने प्रेमचंद की सामाजिक परम्परा को मार्क्सवादी दर्शन के साथ जोड दिया। यशपाल जी का उपन्यास साहित्य उनके राजनितीक, सामाजिक जीवन के क्रमिक विकास को प्रतिबिंबीत करता है। उनेक दृष्टि में साहित्य का उद्देश मानव जीवन के विकास के लिए है। उनके साहित्य में श्रमजीवी वर्ग के प्रति आस्था और शोषक वर्ग के प्रति क्रोध दिखाई देता है। यशपाल जी ने अपने साहित्य, कला, राजनीति, सामाजिक-आर्थिक जीवन, रूढियों का विरोध, नारी स्वतन्त्रता आदि विषयों को अपने उपन्यासों की कथावस्तु बनाया है और मार्क्सवादी धरातल पर अनका विश्लेषण किया है। 'दादा कामरेड', 'देशद्रोही', 'दिव्या', 'मनुष्य के रूप', 'झूठा-सच' आदि उपन्यासों में मार्क्सवादी चिंतन स्पष्ट रूप से झलकता है। उन्हें इस कार्य में सफलता भी मिली है। इस संदर्भ में प्रकाशचन्द्र गुप्त ने कहा है कि-"यशपाल की उपन्यास कला प्रगतिशील कला में आगे बढ़ा हुआ एक महत्वपूर्ण कदम है और प्रेमचंद की परम्परा को नई दिशाओं में विकसित करने का महत्वपूर्ण प्रयास है।"१

प्रस्तावना

यशपालजी के 'दादा कामरेड' इस उपन्यास में उनकी परिवर्तित राजनीतिक विचारधारा की अभिव्यक्ति हुई है। इस उपन्यास में उन्होंने भारतीय स्वाधीनता संग्राम के क्रांतिकारी मोर्चे का वर्णन प्रस्तुत किया है। इस उपन्यास में यशपालजी के प्रगतीशील विचारों के दर्शन होते है। 'दादा कामरेड' इस उपन्यास का प्रगतीशील राजनीतिक पात्र है। यह पात्र पहले आतंकवादियों के नेता के रूप में आकर बाद में कामरेड बनकर साम्यवादी जीवन दर्शन के साफल्य का दिग्दर्शन करता है। 'हरीश' भी इसी साम्यवादी जीवन दर्शन को स्वीकार कर अपने जीवन का बलिदान कर नवीन राजनीतिक चेतना का प्रतिनिधित्व करता है। वह आतंकवादी नीति का विरोध कर सामूहिक जनक्रांति के पक्ष में अपने विचार व्यक्त करता है। अदालत में वह साम्राज्यवाद की शोषण नीति के विरोध में वक्तव्य देता है। डॉ.त्रिभुवन सिंह के मतानुसार-"दादा के रूप में प्रसिध्द क्रांतिकारी चन्द्रशेखर आजाद का और हरीश के रूप में स्वंय यशपाल का व्यक्तित्व झलकता है।"२ यशपाल जी का 'दादा कामरेड' यह उपन्यास साम्यवादी विचारों से ओत-प्रोत तथा मार्क्सवादी चिंतन के दृष्टि से महत्वपूर्ण माना जाता है।

राजनीतिक और सामाजिक वर्ग से सम्बन्धित यशपाल जी का 'देशद्रोही' घटना प्रधान उपन्यास है। यह उपन्यास साम्यवादी विचारधारा से प्रेरीत है। इस उपन्यास में वर्णित सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटनांए 'भारत छोडो' आन्दोलन और द्वितीय विश्वयुध्द के कारण कम्युनिस्टों व्दारा फासिस्ट विरोधी मोर्चो का गठन है। यशपाल ने अपने विचारों को प्रस्तुत करते हुए इस उपन्यास के माध्यम कहा है-"जर्मनी के रूस पर आक्रमण कर देने के कारण कम्युनिस्ट दल की नीति में परिवर्तन करना आवश्यक हो गया था। कम्युनिस्ट तब तक दो साम्राज्यवादी शक्तियों के युध्द में अपने देश के साधनों और जनता की शक्ति का उपयोग किये जाने का विरोध करते आये थे।"३ यशपाल जी 'देशद्रोही' उपन्यास के माध्यम से जनवरी १९४२ में भारत की कम्युनिस्ट पार्टी व्दारा रूस और मित्र देशों

के समर्थन में नाजी आतंक के विरूध्द भी जंग की नीति घोषित करने को ही प्रोत्साहित किया है। कम्युनिस्ट लोग फासिस्ट की बढ़ते हुए शक्ति को रोकना चाहते थे। यशपाल जी ने इस उपन्यास में 'खन्ना' जैसे चरित्र के माध्यम से कम्युनिस्ट पार्टी की नीति को चित्रित किया है।

यशपाल जी ने 'दिव्या' इस उपन्यास में वर्ग चित्रण को प्रस्तुत किया है। मार्क्सवादी विचारधारा सारे संसार को शोषक और शोषित इन दो वर्ग में विभाजीत करती है। यशपाल ने 'दिव्या' इस उपन्यास में माध्यम से तत्कालीन समाज का चित्रण प्रस्तुत किया है। तत्कालीन समाज दो वर्गों में विभाजित था। स्वामी और दास अर्थात शोषक और शोषित। उत्पादनों के सम्पूर्ण साधनों पर स्वामी वर्ग का अधिकार था, जो बिना श्रम किए ऐशो-आराम से रहते थे। उनकी प्रत्येक प्रकार की सेवा दास-दासी का धर्म था। पशुंओं की भांति दास-दासियाँ स्वामी की सम्पत्ति समझी जाती थी। किंचित भी अपराध होने पर स्वामी इन्हे बूरी तरह पीटते थे। दासियों की स्थिति बहूत ही भयावह थी। अनेक प्रकार के अन्याय और अत्याचार दास-दासियों पर किए जाते थे। शोषित वर्ग के शोषण की कोई सीमा न थी। यशपालजी ने अपने 'दिव्या' इस उपन्यास के माध्यम से स्वामी और दास के यथार्थ बोध को प्रस्तुत किया है। जिस में मार्क्सवादी चिंतन के दर्शन होते है।

यशपाल जी राजनीतिक उपन्यासकार के रूप में जाने जाते हैं। उनपर 'मार्क्सवाद' का प्रभाव रहा है। मार्क्सवादी विचारधारा उनके चिंतन का मूल बिंदू है। 'मनुष्य के रूप' उपन्यास में उन्होंने 'भूषण' इस पात्र के माध्यम से अपने मार्क्सवादी विचारों को प्रस्तुत किया है। विश्वम्भर मानव के शब्दों में-''लेखक मार्क्सवादी है और इस दृष्टिकोण का प्रभाव उनकी रचना पर भी पड़ा है, यह 'भूषण' के चरित्र-चित्रण से एकदम स्पष्ट है। इस में भी सन्देह नही कि कम्युनिस्ट पार्टी का परिचय उसने देश की अन्य राजनीतिक पार्टियों की अपेक्षा अधिक सहानुभूती के साथ किया है। पर यहाँ प्रचार का अंश बहूत कम है और लेखनी में संयम है। यदि प्रचार कहीं है तो इतना अस्वाभविक बन कर नही आया कि सहन ही न किया जा सके।''४ यशपाल जी ने अपने साहित्य के माध्यम से शोषण-विरोध, रूढ़ीवाद का विरोध, नारी स्वतंत्रता, विभिन्न सामाजिक समस्यांए आदि विवेचन से मार्क्सवादी दृष्टिकोण को स्पष्ट किया है। 'मनुष्य का रूप' इस उपन्यास के प्रगतीशील पात्र, मार्क्सवादी चिंतन को यथार्थ से जोड देते है।

यशपाल जी 'झूठा सच' उपन्यास के माध्यम से मार्क्सवादी विचारधारा को प्रस्तुत किया है। इस उपन्यास के कथानक के प्रारंभ में स्टूडेंट फेडरेशन की स्थापना करायी है और साम्यवाद के क्रियात्मक रूप को उचित बतलाया है। उन्होंने कम्युनिस्ट पात्रों के त्याग और सेवा परायणता को दिखाकर साम्यवाद की महत्ता को प्रस्तुत किया है। यशपाल जी समाज को विकासोन्मुख मानते है। वे इस उपन्यास में समाजवादी विचारधारा के अनुकूल सन्देश देते है। उनका उद्देश साम्यवादी समाज की रचना करना है। उपन्यास के अंत में जनता की शक्ति को ही सर्वश्रेष्ठ ठहराया गया है। डॉक्टर नाथ गिल से संवाद करते हुए कहते है- ''गिल, अब तो विश्वास करोगे, जनता निर्जीव नहीं है। जनता सदा मूक भी नही रहती। 'देश का भविष्य' नेताओं और मंत्रियों की मुठ्ठी में नहीं है देश की जनता ही के हाथ में है।''५ यशपाल जी की समाजवादी भावना मार्क्स से समृध्द हुई है और वह उनके उपन्यासों में व्यक्त हुई है। वे मानते है कि समाजवाद का वास्तविक रूप तभी सिध्द होगा जब मनुष्य दूसरों की भावना और सदिच्छा पर विश्वास करें। 'मार्क्सवाद' असमानता पैदा करनेवाली स्थितियों को दूर कर, फिर विषमता को दूर करने का दावा करता है।

यशपाल जी के साहित्य में श्रमजीवी वर्ग के प्रति आस्था और शोषक वर्ग के प्रति क्रोध दिखाई देता है। मार्क्सवादी सिध्दातों के अनुसार यशपाल की धारणा है कि उत्पादन के समस्त साधनों पर विशेष का अधिकार न होकर समाज अथवा सरकार का अधिकार होना चाहिए। यशपाल कट्टर मार्क्सवादी होने के कारण उनके समूचे साहित्य में मार्क्सवाद का प्रचार स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। उनके जीवन विकास का मूल आधार मार्क्सवाद रहा है। यशपाल जी ने मार्क्सवाद के तत्वों को अपने जीवन में स्वीकार किया था। वे व्यावहारीक रूप, समय, स्थान, परिस्थिति तथा विचारधारा के महत्व को स्वीकार कर आगे बढ़ते है। उनका स्पष्ट मानना था कि कल्पना को यथार्थ या व्यवहार में बदलते समय चिंतन पर ताला नही लगा सकते। मानव समाज का हित देखकर आगे बढ़ना चाहिए। उनके विचारों से स्पष्ट होता है कि मार्क्सवादी दर्शन ही उनकी विशेष पहचान है।

यशपाल जी के उपन्यास 'दादा कामरेड', 'देशद्रोही', 'दिव्या', 'मनुष्य के रूप', 'झूठा-सच' आदि का अध्ययन करने से यह स्पष्ट होता है कि उनके उपन्यासों में मार्क्सवादी चिंतन को चित्रित किया गया है। यशपाल जी ने अपने जीवन-दर्शन के रूप में मार्क्सवाद को स्वीकार किया था। यशपाल की मार्क्सवादी चिंतन के प्रति आस्था का प्रमाण अनका विशाल साहित्य भण्डार है। उन्होंने अपने साहित्य में विविध प्रसंगो, सामाजिक समस्याओं तथा राजनीतिक प्रतिबध्दता को स्पष्ट करते हुए मार्क्सवादी तत्वों का प्रतिपादन किया है। मार्क्सवाद में शोषण का विरोध है इसलिए उन्होंने समाज की वर्ग व्यवस्था पर भी प्रहार किया है। यशपाल जी ने साहित्यिक तथा चिंतक के रूप में मार्क्सवाद को भारत भूमि में लाने और उसे सामान्य लोगों तक पहुंचाने का कार्य किया है।

संदर्भ सूची :

१. प्रकाशचन्द्र गुप्त - आज का हिन्दी साहित्य, पृ. ७५
२. डॉ.त्रिभुवन सिंह - हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद, पृ.२०५
३. यशपाल - देशद्रोही,(पृ.१२९) लोकभारती प्रकाशन,इलाहाबाद
४. यशपाल अभिनंदन ग्रंथ(साहित्य दर्शन),पृ.१०१
५. यशपाल - 'झूठा सच' भाग-२,(पृ.५८३) लोकभारती प्रकाशन म.गांधी मार्ग, इलाहाबाद-१